आरती श्री यमुना जी की (१)

जय कालिंदी, हरि प्रिया जय,
जय रवि तनय, तपोमयी जय ।।१।।
जय श्यामा अति अभिरामा जय,
जय सुखदा श्रीहरि रामा जय ।।२।।
जय ब्रजमंडल-वासिनी जय जय,
जय द्वारिका निवासिनि जय जय ।।३।।
जय कलि-कलुष नसावनि जय जय,
जय यमुने जय पावनि, जय जय ।।४।।
जय निर्वाण प्रदायिनी जय जय,
जय हरि प्रेम दायिनी जय जय ।।५।।

विवरण

जो भगवान श्री कृष्ण को अतिप्रिय लगती हैं ऐसी यमुना नदी की जय हो । जो भगवान सूर्य की किरणों के समक्ष तपस्या करती दिखाई देती हैं तथा जिनका वर्ण साँवला है एवं जो मन को प्रसन्न करने वाली हैं, ऐसी यमुना माता भगवान श्री कृष्ण के मन को सुख पहुँचाने वाली हैं ।

यह यमुना ब्रज के चारों ओर निवास करने वाली हैं तथा द्वारिका भी जिनका निवास स्थान है । ये सभी पाप - दोषों का विनाश करने वाली तथा परम पवित्र हैं । यह यमुना माता हमें हमारे सभी पापों से निवृत्त कर देने वाली हैं तथा प्रभु के परम पद को प्राप्त कराने वाली हैं ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.